बड़का एन्थनी
और जादुई अंगूठी

लेखन व चित्र: टॉमी पाओला

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

बड़का एन्थनी और जादुई अंगूठी

लेखन व चित्र: टॉमी पाओला
भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

सर्दियाँ कलाब्रिया गाँव में शांति से गुज़र रही थीं, जहाँ स्ट्रेगा नोना, यानी जादूगरनी दादी, अपने सहायक बड़के एन्थनी के साथ रहती थीं। लोग स्ट्रेगा नोना के पास अपनी तमाम परेशानियों से निजात पाने आया करते थे। बड़का एन्थनी चुपचाप अपने काम करता और सलीके से पेश आने की कोशिश भी। हर सुबह नानफ़रोश की बेटी बम्बोलोना ताज़ी डबलरोटी पहुँचाने दादी के घर आया करती थी।
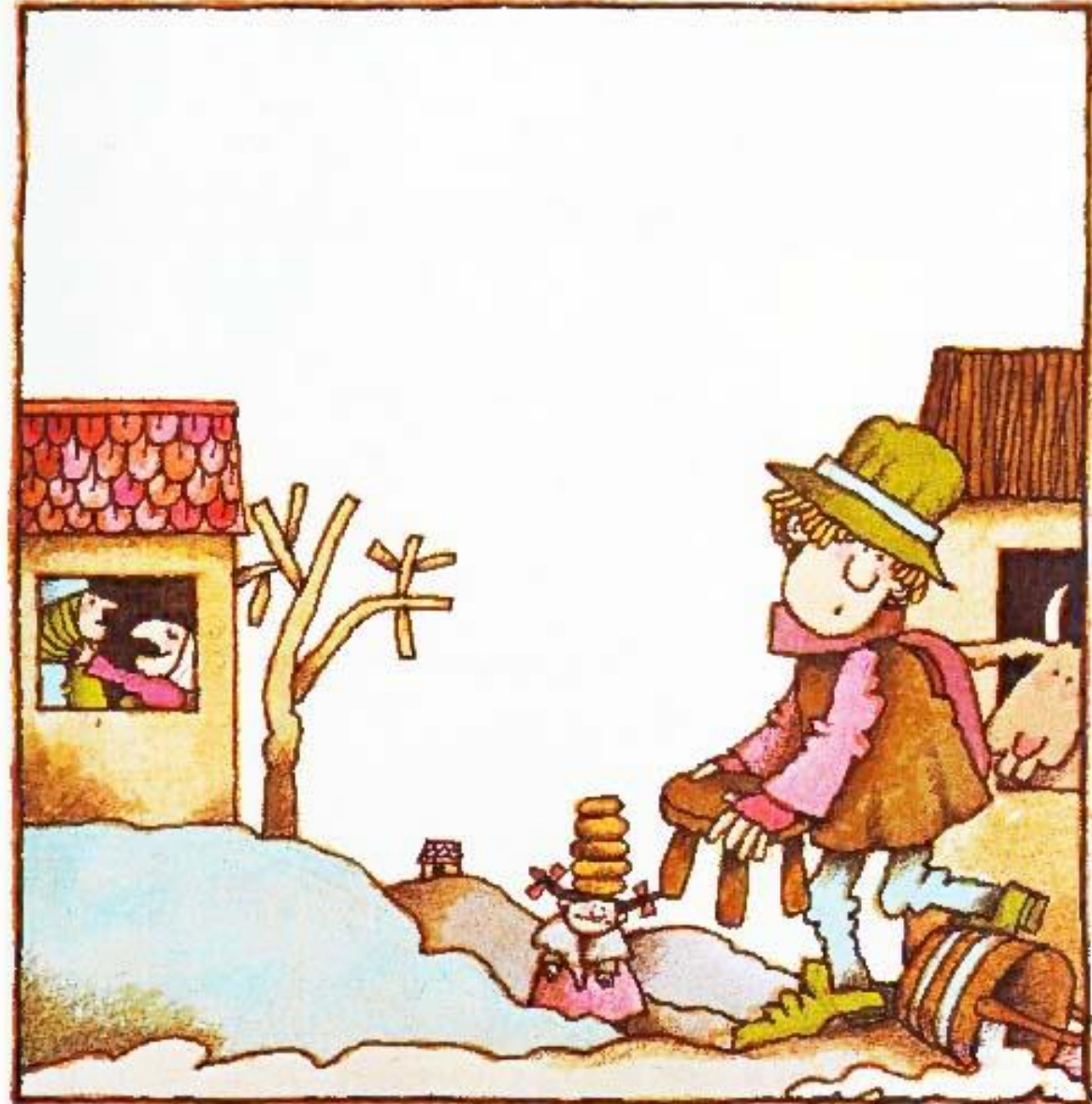
पर तब एक दिन सूरज कुछ ज़्यादा ही तेज़ चमकने लगा, पाखियों के गीत कुछ और मधुर सुनाई देने लगे, और हर ओर फूल खिलने लगे। बसन्त आ गया था, पर बड़का एन्थनी सुस्त हो चला।

''एन्थनी,'' स्ट्रेगा नोना ने कहा, ''हुआ क्या है? तुम देर तक सोते रहते हो, तुम्हारे काम-काज आधे-अधूरे पड़े हैं। और जब भी मैं तुम्हें देखती हूँ तुम आसमान की ओर ताकते ठण्डी उसाँसें भरते नज़र आते हो।''

'पता नहीं क्या हो गया है मुझे,'' बड़के एन्थनी ने जवाब दिया। ''मेरी खोपड़ी में सब कुछ गड्डमड्ड-सा है।''

''लगता है तुम्हें बसन्त बुखार चढ़ आया है,'' स्ट्रेगा नोना बोलीं। ''तुम्हें दरअसल थोड़ी-सी रात की मौज-मस्ती की दरकार है। तुम आज रात गाँव में होने वाले नाच में क्यों नहीं जाते? देखना तुममें चुस्ती आ जाएगी।'' बड़के एन्थनी ने फिर से एक गहरी साँस छोड़ी। ''गाँव तो बड़ा दूर है,'' वह ढ़ीली आवाज़ में बोला। ''और फिर मेरे साथ नाचेगा भी भला कौन?''

''बम्बोलोनो नाचेगी, नानफ़रोश की बेटी,'' स्ट्रेगा नोना ने कहा। ''वह जब डबलरोटी लेकर आए, खुद ही उससे पूछ क्यों नहीं लेते?''

''कौन?'' बड़का एन्थनी बोल पड़ा (क्योंकि उसने कभी बम्बोलोना पर ग़ौर ही नहीं किया था)।

रात के खाने के बाद स्ट्रेगा नोना अपनी अल्मारी ठीक कर रही थीं कि अचानक रुकीं और खुद से बोलीं, "अम्म्म्म्म, थोड़ी-सी रात की मौज-मस्ती। ख़याल बुरा नहीं है। बड़ा अर्सा गुज़र गया जब पिछली बार गाँव में जाकर टारैन्टैला (जोड़े में नाचा जाने वाला इतालवी नृत्य) नाचा था।"

और तब दादी अल्मारी के सारे छोटे दराजों को खोल-बन्द कर, उनमें झांक कर कुछ तलाशने लगीं।

इस खटपट से बड़का एन्थनी चौंक गया। वह बाहर ही बैठा चाँद को ताक जो रहा था। "स्ट्रेगा नोना आखिर कर क्या रही होगी?" उसने खुद से पूछा और दरवाज़े की दरार से अन्दर झाँकने लगा।

"अरे, यह रही," स्ट्रेगा नोना ने एक छोटी-सी सोने की अंगूठी उठाते हुए कहा। "इसका इस्तमाल मैंने बरसों से नहीं किया।" दादी ने दाहिने हाथ की पहली उंगली में अंगूठी पहनी और गाने लगीं:

"ओ मेरी छोटी-सी सोने की अंगूठी,
सुन यह गीत जिसे हूँ मैं गाती।
बना दे मुझे वैसा जैसी मैं हूँ नहीं,
चल दूंगी ठुमकते मैं गाँव में नाचने।

गीत के खत्म होने के साथ धुँए का एक गुबार उठा और स्ट्रेगा नोना की जगह वहाँ शानदार कपड़े पहने एक खूबसूरत युवती खड़ी थी।

बड़के एन्थनी को एकबारगी अपने आँखों पर भरोसा ही नहीं हुआ।

बड़का एन्थनी लुकता-छिपता उस खूबसूरत औरत के पीछे-पीछे गाँव के चौक तक पहुँच गया ...

और वहाँ वह उस सुन्दरी को रात भर मस्ती से टारैन्टैला नाचते देखता रहा।
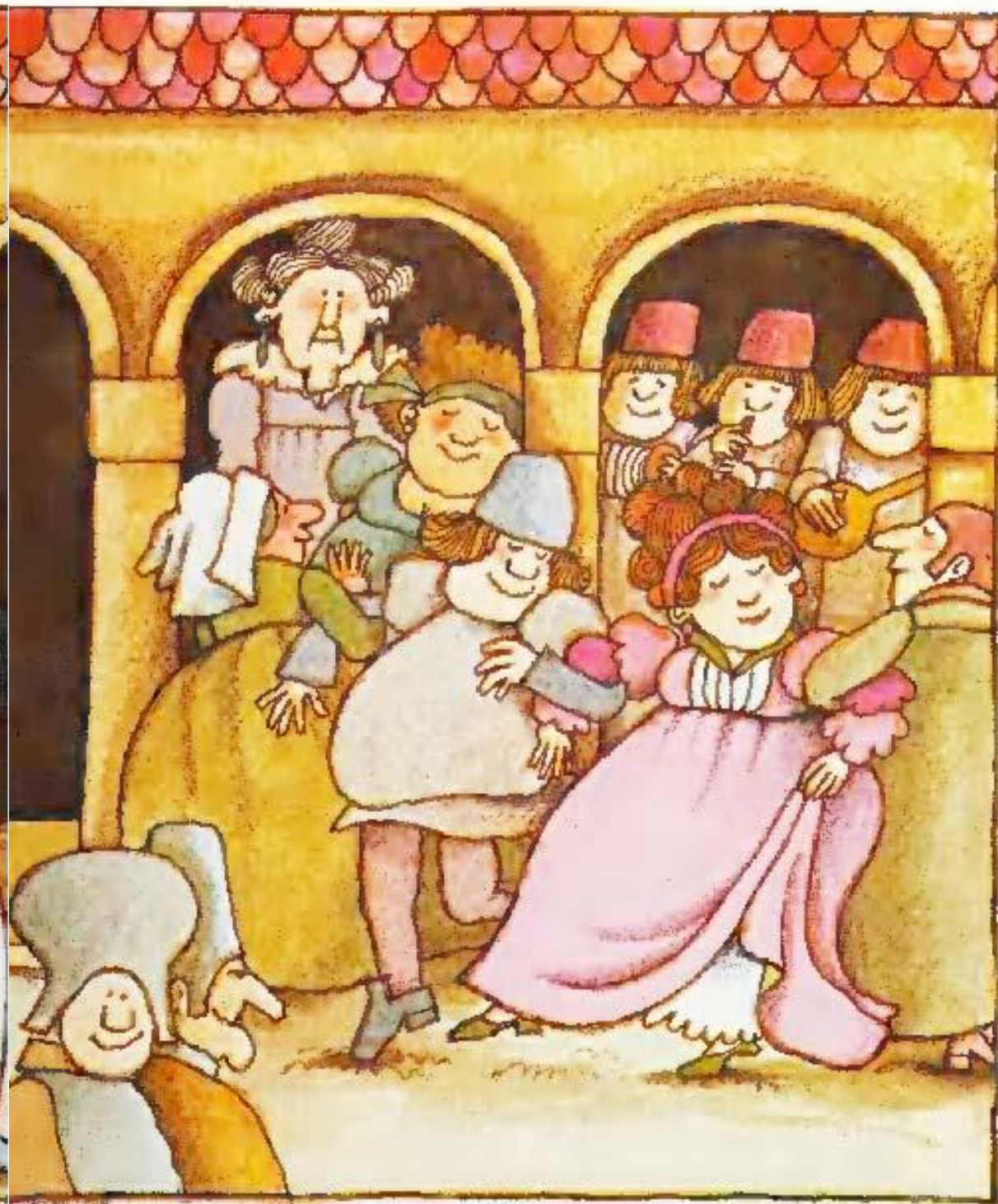
आख़िरकार नाच खत्म हुआ, बड़का एन्थनी उस सुन्दरी के पीछे-पीछे स्ट्रेगा नोना के घर तक लौटा।

वहाँ उस सुन्दरी ने फिर एक गीत गायाः
"ओ मेरी चमकीली सोने की अंगूठी
सुन वह गीत फिर जिसे मैं गाती।
नाच हुआ खत्म और चाँद गया ढ़ल,
पलट कर बना दे मुझे जस का तस।"

और उसने अपनी ऊंगली से अंगूठी उतार दी।

धुंए के गुबार के साथ वहाँ स्ट्रेगा नोना खड़ी थी। "ओहो!" बड़का एन्थनी बुदबुदाया। "काश यह अंगूठी मुझे भी मिलती तो मैं पूरे कलाब्रिया का सबसे छबीला नौजवान बन जाता। गाँव की सभी औरतें मेरे ही साथ नाचना चाहतीं।"

बड़के एन्थनी ने तय किया कि वह मौके का इन्तज़ार करेगा - जो किस्मत से उसे अगले ही दिन तब मिला जब बम्बोलोना डबलरोटी थमा कर वापस लौट चुकी थी।

"बड़के एन्थनी, मुझे अपने धरम-बच्चों से मिलने जाना है," स्ट्रेगा नोना ने कहा। ईस्टर का त्यौहार जो आने वाला है। देखो शराफत बरतना, कोई गड़बड़-घोटाला मत करना, अपने सारे काम पूरे करना, अलसाते बैठे न रह जाना।"

"जी, बेशक स्ट्रेगा नोना," एन्थनी ने फौरन जवाब दिया।

बड़के एन्थनी ने पूरे दिन बेसब्री से शाम होने का इन्तज़ार किया। आख़िरकार जब सूरज ढल गया वह अन्दर घुसा और दादी जादूगरनी की जादुई अल्मारी को खंगालने लगा। तब तक, जब तक उसे वह छोटी-सी सुनहली अंगूठी न मिल गई।

उसने अंगूठी अपने दाहिने हाथ की पहली उंगली में जहाँ तक हो सकता था चढ़ाई। तब उसने वह गीत गायाः

"ओ मेरी छोटी-सी सोने की अंगूठी,
सुन यह गीत जिसे हूँ मैं गाता।
बना दे मुझे वैसा जैसा मैं हूँ नहीं,
चल दूंगा ठुमकते मैं गाँव में नाचने।

धुंए का एक गुबार उठा। बड़का एन्थनी आईने की ओर भागा और खुद को ग़ौर से देखने लगा। जो चेहरा उसे नज़र आया वह उसका कतई नहीं था। वहाँ तो सुन्दर कपड़ों में सजा-धजा छैल-छबीला बड़का एन्थनी नज़र आ रहा था।
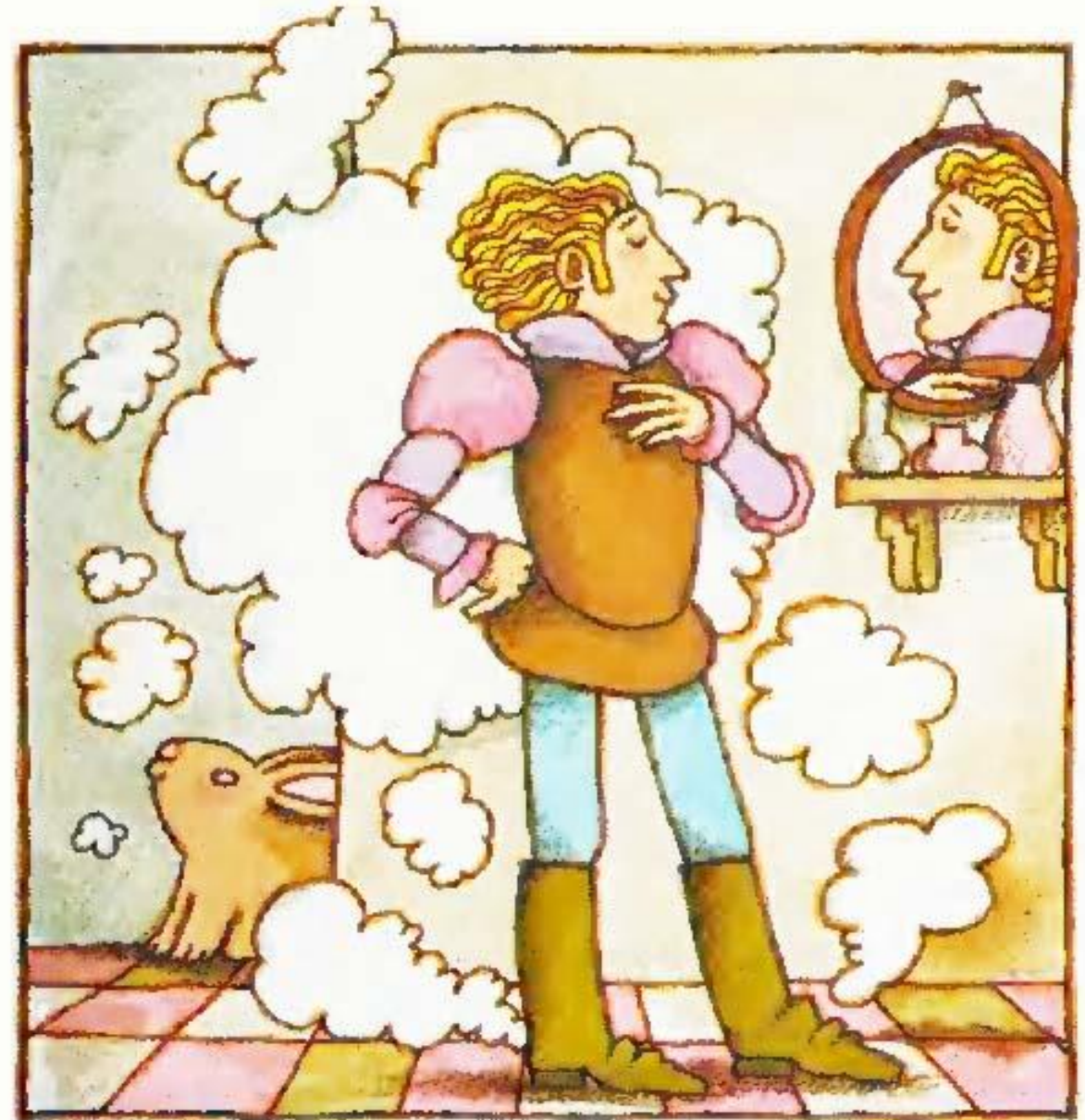
"आहा!" छबीला बड़का एन्थनी खुशी से चीखा। "तो अब हो जाए कुछ रात वाली मौज-मस्ती!"

जब वह टहलता-इतराता गाँव में दाखिल हुआ
सब लोग चौक में टारैन्टेला नाच रहे थे।

पल भर भी नहीं बीता होगा कि छबीला बड़का एन्थनी चारों ओर से जवान और बूढ़ी, मोटी और पतली, सुन्दर और नासुन्दर औरतों से घिर गया। उन्होंने इतने बाँके नौजवान को अपनी ज़िन्दगी में पहले कभी देखा ही नहीं था।

''चलो, तुम मेरे साथ नाचो,'' हरेक उसका हाथ खींचते कहने लगी।
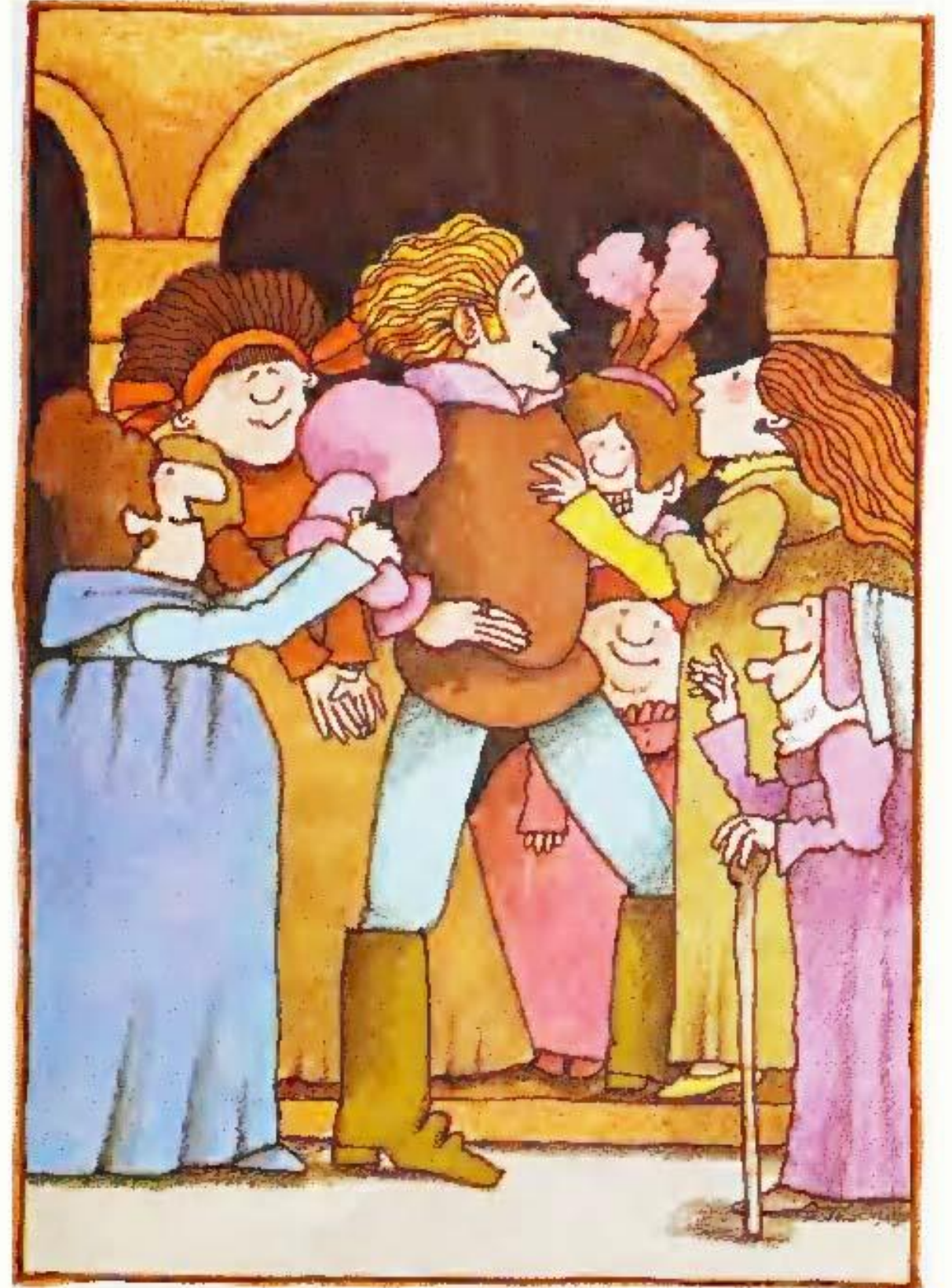
वे गोल-गोल, घुमेरदार चक्कर काटते टारैन्टेला नाचने लगे।
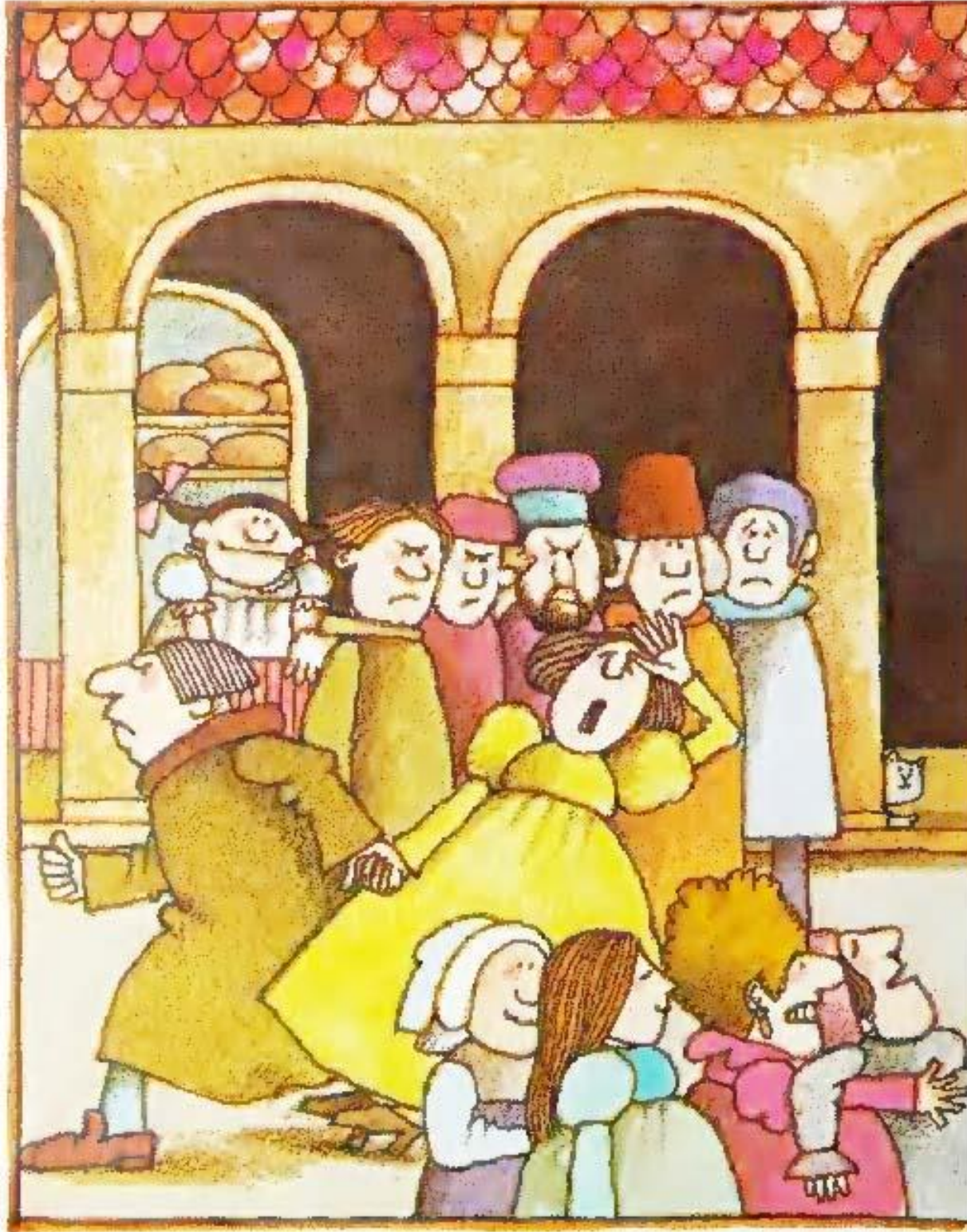
"तो इसे कहते हैं रात की मौज-मस्ती!" छबीले बड़के एन्थनी ने खुश हो सोचा।
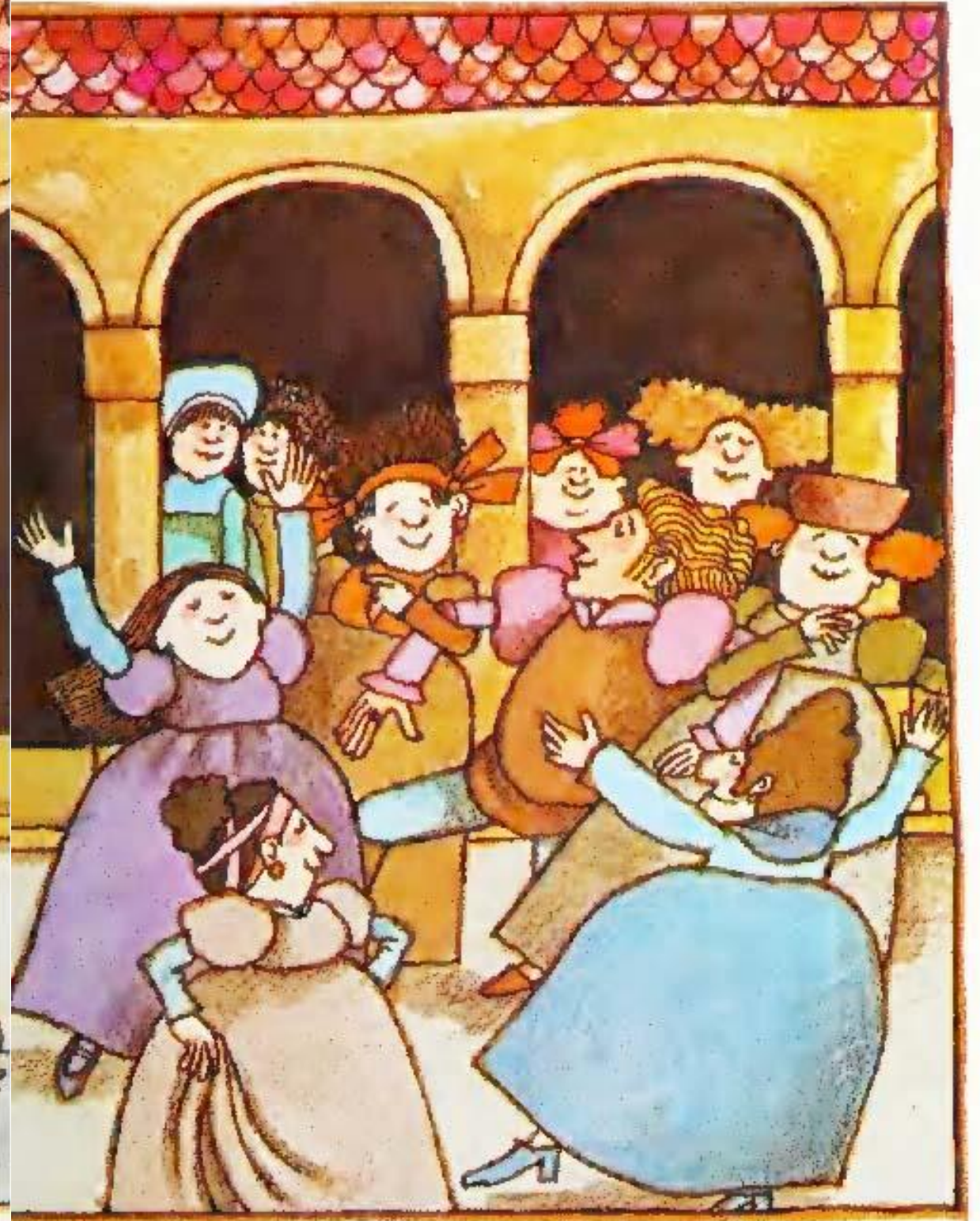
कई घंटों तक लगातार नाचने के बाद छबीला बड़का एन्थनी थक चला। पर औरतों ने उसे सुस्ताने तक नहीं दिया।

''प्यारे,'' वे चीखीं, ''अब मेरे साथ नाचो, मेरे साथ!'' ''अगली बार मेरे साथ!'' और यह कहते वे एक-दूसरे को धकियाने लगीं।

उन्होंने इतनी धक्कमपेल की कि छबीला बड़का एन्थनी सहम गया।

''एक मिनट...बस एक मिनट! मुझे साँस तो लेने दो,'' वह ज़ोर से बोला।

पर धकियाना, खींचतान, और झपटना वैसे ही जारी रहा। मरता क्या न करता? छबीला बड़का एन्थनी अपनी जान बचा वहाँ से भाग निकला।

सारी की सारी औरतें भी भागीं। ठीक उसके पीछे-पीछे।
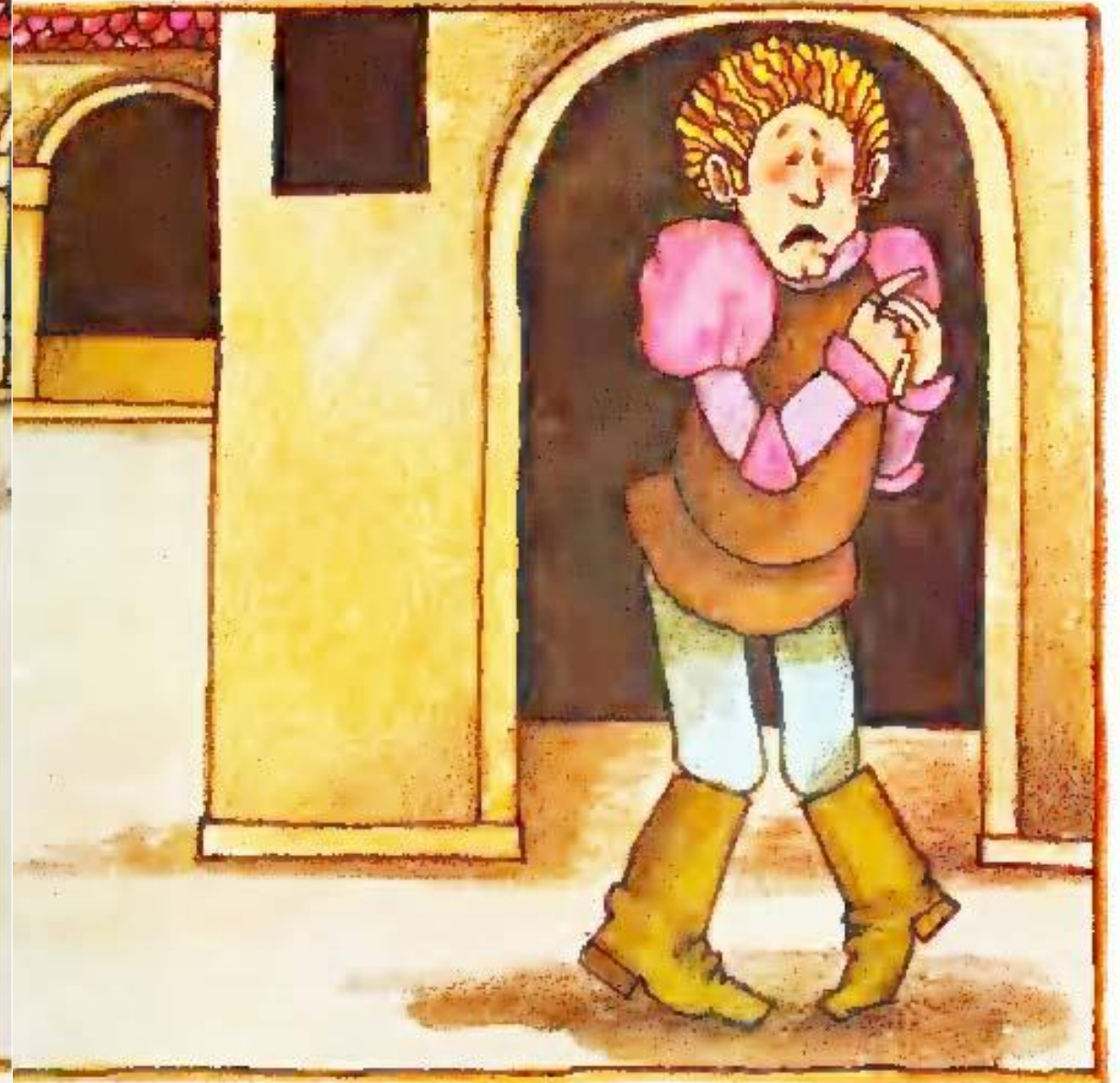
छबीला एन्थनी कुछ दूर जाकर रुका और उसने गाना शुरू किया:

''ओ मेरी चमकीली सोने की अंगूठी

सुन वह गीत फिर जिसे मैं गाता।

नाच हुआ खत्म और चाँद गया ढ़ल,

पलट कर बना दे मुझे जस का तस।''

तब उसने अपनी अंगूठी उतारने की कोशिश की। पर वह तो फंस चुकी थी। ''अरे रे,'' वह घबरा कर बोला, ''अब मैं क्या करूँ?''

वह फिर दौड़ा, फव्वारे के परे, पादरी को पीछे छोड़, प्रार्थना करने जा रही कॉन्वेन्ट की साध्वियों के परे...

दरवाज़े के बाहर, बकरियों के परे, वह खेतों की ओर दौड़ा। "मेरे! मेरे! मेरे साथ नाचो! ओ मेरे प्यारे!" उसके करीब आती औरतें चीखती गईं।

छबीला बड़का एन्थनी पूरे दम से दौड़ता रहा। उसने फिर से गीत गाया, गोकि उसकी साँस अब फूल रही थी। उसने फिर से अंगूठी उतारने की कोशिश की। पर अंगूठी थी कि टस से मस नहीं हुई।

आख़िर वह सरू के पेड़ पर चढ़ गया। ठेठ ऊपर तक।
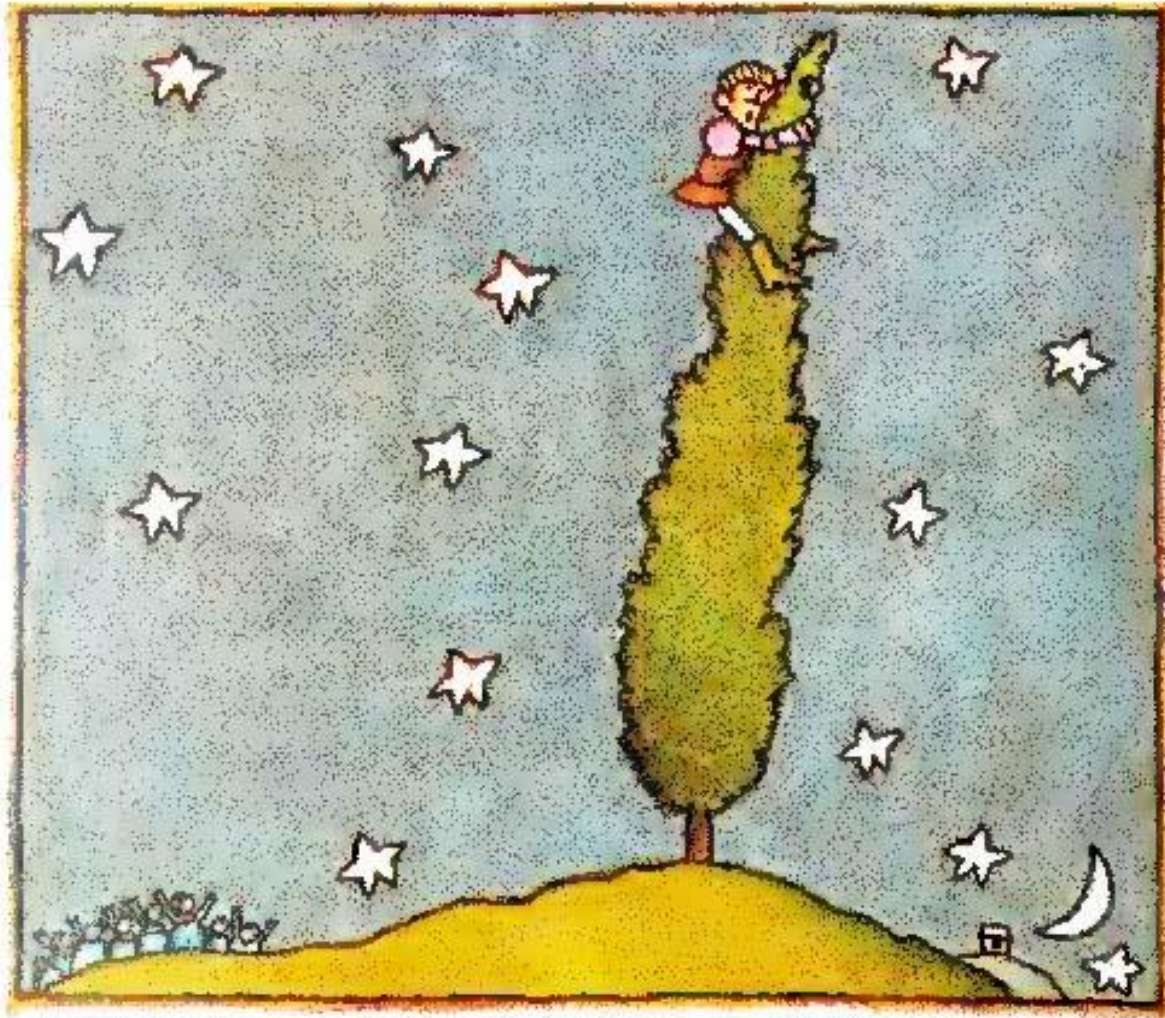
अब वह कहीं और जा ही नहीं सकता था।

"मेरी मदद करो! मुझे बचाओ!" वह बेबसी से चीखा। उसने कई बार गीत गाया, कई बार अंगूठी उतारने की कोशिश की। पर सब नाकाम रहा।

जल्द ही सारी औरतें पेड़ तक आ पहुँचीं और पेड़ को ज़ोर-ज़ोर से हिलाने लगीं। वे पेड़ को हिलाती रहीं, हिलाती रहीं, हिलाती रहीं।

"नीचे उतरो ज़ालिम छबीले। हमारे साथ कुछ देर और नाचो! मारिया के साथ! कॉन्चैटा के साथ! क्लोरिन्डा के साथ! थरेसा, फ्रांचेस्का, क्लोटिल्डा के साथ!" वे चीखीं।

उन्होंने पेड़ को इस कदर ज़ोर से हिलाया कि छबीले बड़के एन्थनी की पकड़ ढीली पड़ गई। वह हवा में उछल गया।

"अरे नहीं!" वह डर से चिल्लाया। "अब तो वे मुझे फिर से पकड़ लेंगी!"

वह हवा में उड़ता एक छोटे-से घर के सामने ठीक अपनी नाक के बल जा गिरा - वह घर स्ट्रेगा नोना का था।

और किस्मत से स्ट्रेगा नोना वापस लौट चुकी थीं। तीन बार किसीको चूमने में जितना समय लगता है उससे भी कम समय में वे पूरे मामले को ताड़ गईं।

''एन्थनी,'' उन्होंने सख्ती से पूछा, ''मेरी अंगूठी तुम्हें कहाँ मिली?''

''ओह दादी जादूगरनी मेरी मदद करो! मैं तो बस थोड़ी सी मौज करना चाहता था। ज़रा सी रात की मस्ती। मैंने अंगूठी उतारने का गीत भी गाया। पर वह तो फंस गई है। मैं क्या करूँ? लो वे आ पहुँचीं - वे मेरे पीछे पड़ गई हैं! मुझ पर रहम करो स्ट्रेगा नोना! मुझे फिर से मैं बना दो ना।''

स्ट्रेगा नोना ने जैतून के तेल की शीशी खेली, और थोड़ा-सा तेल उसकी उंगली पर मल दिया।

''अब,''उन्होंने हुक्म दिया, ''गाओ!''

छबीले बड़के एन्थनी ने गला खोल कर गायाः

''ओ मेरी चमकीली सोने की अंगूठी

सुन वह गीत फिर जिसे मैं गाता।

नाच हुआ खत्म और चाँद गया ढ़ल,

पलट कर बना दे मुझे जस का तस।''

अंगूठी अब आसानी उतर आई, और जब धुंए का गुबार छंट गया तो वहाँ वही पुराना सीधा-सादा बड़का एन्थनी बैठा था।

''कहाँ है वह? अरे वह कहाँ गया? वह ज़ालिम छबीला आखिर कहाँ गायब हो गया?'' औरतों ने दिल मसोस कर पूछा।

''यहाँ तो देख ही सकती हो कि मेरे और इस बड़के एन्थनी के सिवा कोई है नहीं,'' स्ट्रेगा नोना ने जवाब दिया।

''रुको, थमो, ज़रा ठहरो हमारे लिए,'' चिल्लाती औरतें आगे भागीं। और जल्द ही वे आँखों से ओझल हो गईं।

''ओह भोले एन्थनी,'' दादी ने कहा। ''तुम कभी सीखोगे ही नहीं।''

"स्ट्रेगा नोना, तुमने मेरी जान बचा ली। मैं फिर कभी - वादा करता हूँ फिर कभी भी तुम्हारे जादू को हाथ तक नहीं लगाउंगा।''

''ख़ैर कोई बात नहीं बड़के एन्थनी,'' स्ट्रेगा नोना ने मुस्कुराते हुए कहा, ''बसन्त में और भी कई तरह के जादू हुआ करते हैं।